भूख और बंदूक के बीच

शैली खत्री

आज सुंदरी की इच्छा नहीं हो रही थी बिस्तर से बाहर निकले; पर आराम क्या इतनी आसानी से मिलने वाली चीज है कि चाह लिया और मिल गया। वह लेटी रही पर मन में सैकड़ों चिंताओं का डेरा था, आज खाना क्या बनेगा, पैसे कहां से आएंगे, बाप का जर कम हुआ या नहीं, काम की खोज में आज कहीं जाना ठीक रहेगा कि आज जंगल पर ही निर्भर हो जाएं। जब चिंताएं बढ़ती गईं तो वह उठ कर बैठ गई। बाप अपने बिस्तर पर नहीं था, उसने एक भरपूर अंगड़ाई लेकर बदन का दर्द निकाला। इ फागुन चइत महीना में हमीन कर गोटे शरीर बाथेला, उसने सोचा और दुबारा अंगड़ाई ली। घर से बाहर आकर देखा तो बैइर उग चला था, वह घर के किनारे से होती हुई जंगल की ओर निकल गई। नित्य क्रिया संपन्न करने के बाद उसने केंद फल तोड़े। जल्दी-जल्दी में टोकरी तो लाई नहीं थी इसलिए साड़ी के आंचल में ही फलों को इकठ्ठा किया। झपट कर घर पहुंची। फलों को टोकरी में उझल कर, बाप को आवाज दी। बाप घसिया बेदिया कमरे के कोने में बिछे अपने बिछावन पर लेटा था। ऐ बाप का होलवा, जर एखनो हउ का, उसने बाप के पास जाकर पूछा; साथ ही उसे छू कर भी देखा। बाप का शरीर गर्म तवे के समान लहक रहा था। हाय दईया। बाप तोर तो गोटे शरीर गरम आहे। बाप को दवा की अत्यंत आवश्यकता समझ कर उसने जल्दी से बाजार जाना तय किया। बाप से बोली; माय के कइ देभिन हाम ओरमांझी बाजार जात हियौ। केंद बेचेक आहे। केंद बेचेक आउर कुछों काम आहे। कइर के घुरमु। आउर संघे संघे दवाई लेले आनमूं।

सुंदरी ने भीतर की रसोई में जाकर कपड़े बदले। घर में कुल दो ही तो कमरे हैं। बाहर का कमरा थोड़ा बड़ा है। यूं दो कमरा नहीं भी कह सकते हैं; एक बड़े से कमरे के आधे हिस्से का आधा भाग दीवार से घेरा है। अब इसे दो कमरे का घर कहा जाए या एक कमरे का, क्या फर्क पड़ता है। सुंदरी तो इसी बिना खिड़की, दरवाजे वाले घर में जन्मी, पली और बढ़ी है। तभी उसे घर का अंधेरा कभी अंधेरा नहीं लगता, उसकी नोनी झड़ती दीवारें मां के बेतरा का आभास देती हैं। वह तो रात हो या दिन घर के अंदर ही खाना बना लेती है। मां की जिद पर ही बाहर के चुल्हे पर खाना बनाती है। ऐसे तो सब जने बाहर के कमरे में ही सोते हैं। पर किसी पुरू गोतिया के आने पर माय के साथ सुंदरी भीतर के कमरे में सो लेती है। नहाना तो आज नहीं हो सकेगा; अब इतनी दूर जाकर कौन नहाए, कपड़े बदलते हुए उसने सोचा। आज नहाएगी तो समय की बर्बादी ही होगी। अभी बाप की तबियत खराब है। घर में नून के अलावा, खाने को कुछ है ही नहीं। सुंदरी टोकरी लेकर बाहर निकली। अब उसने नीली पार वाली साड़ी पहन रखी थी। टोकरी पर नजर डाली तो आधा भी नहीं भरा था। सखुआ सकम भी तो लेबे पड़तै नी तो का में बेचबैए, बुदबुदाते हुए वह घर के अंदर गई कि शायद कल के बचे सखुआ पत्ते मिल जाएं। कुछ पत्ते थे, उसे देखकर खुशी हुई। टोकरी में सकम डाल कर उसने पुरानी साड़ी का फटा टुकड़ा भी उठा लिया। वक्त जरूरत काम पड़ सकता है। वह बाहर निकली ही थी कि आवाज आई; ऐ सुंदरी कहां जात हे, तनिक रुक, हाम भी जइभो।

वह असमंजस में पड़ी। जल्दी जाना जरूरी है; पर वह सोमारी को छोड़ भी नहीं सकती थी। वही तो उसकी सुख-दुख की साथिन है। वह पीछे मुड़कर सोमारी के घर की ओर चली। जल्दी कर रे, आज बाप कर बड़ी तेज जर हाय।

हमीन के खून का ज्यादे मीठा होत है जो मच्छर सब हमीन के पीछे ही पड़ल रहत है। रोज तो केकरी न केकरी जर चढ़ल रहेल; सोमारी बुदबुदाई।

का जानि, सुइन आही कि सरकार कुछ दवाई निकालाय हयं। जेकर से सब मच्छर मइर जाइयन; सुंदरी ने बताया।

अपन गांव में तो अइसन कखनो नी आएहे; सोमारी ने पूछ ही लिया।

रहै दे रे, सोमारी। कखन चलबे, जल्दी कर नी। बाप खातिर मन कइसन लागत हे।

बेचेले का ले जाइत हीं आइज, सुंदरीने पूछा।

मुराइन कर खेत से झंगरी लाइन हियइ। एक टोकरी आहे। कहत है जो तीस रुपैया लेमु। अब देख, कतई हम के बचतई। सुंदरी और सोमारी दोनों ने अपनी-अपनी टोकरी उठा ली। आज शुक्रवार है, ओरमांझी हाट का दिन। नहीं तो सामान्य दिनों में कुछ बेचकर कमाना और भी मुश्किल होता है।

बातें करते-करते दोनों ओरमांझी पहुंच गई। बाजार में दोनों ने अपने-अपने टोकरे पास-पास रखे और ग्राहक का इंतजार करने लगी। आस-पास के गांवों से आकर रोज ग्राहकी करने वालों से सुंदरी सोमारी की पहचान हो गई थी। बीच-बीच में सबसे बातें होने लगीं। ओरमांझी हाट रांची या दूसरे बड़े शहरों जैसा बड़ा तो नहीं था पर एनएच सड़क बनने, जू, अपोलो हॉस्पिटल, विकास इलाके में अच्छे स्कूलों, रांची ओरमांझी मार्ग में बीआईटी मिश्रा, बीआईटीटी आदि संस्थानों के कारण ओरमांझी का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। सुना है ओरमांझी में रक्षा विभाग के गोदाम भी हैं। जाने सरकार उनमें क्या-क्या भरकर रखती है। यहां दुकानों की कमी नहीं है। सब्जी बाजार में फल, सब्जी, छुटपुट घरेलू सामान, अनाज, कपड़ों की फेरी वाले आदि सभी बैठते हैं। सोमारी और सुंदरी दोनों के हाथ आज निराशा ही लगी। फागुन आधा चढ़ा है। हर तरफ बूंट झंगरी की बहार थी। ऐसे में ग्राहक सिर्फ सोमारी की दुकान पर ही क्यों आते। खैर शाम तक उसने 50 रुपये बना ही लिए थे। मार्केट में चना दस रुपये किलो था। सोमारी ने उसी भाव में बेचा। सुंदरी तो आज केंद फल लायी थी। दो से तीन रुपये दोना इसका मार्केट रेट था। एक दोने में 5-6 केंद रखने होते थे। दो बजे तक सुंदरी के सारे केंद बिक गए। सुंदरी के हाथ 40 रुपये आए। उसकी समझ में नहीं आया भरी दोपहरी में वह दूसरा काम कैसे खोजेगी। एक बार तो लगा उससे गलती हो गई; भले ही वह सुबह ही काम की तलाश में निकलती तो उसे दिन भर का कोई न कोई काम मिल जाता और वह सौ रुपये से अधिक कमा लेती। फिर लगा रोज काम कहां मिल पाता है; आज तो घर में खाने को भी कुछ नहीं था। दिन भर मां और बाप ने पता नहीं क्या खाया होगा। काश मंगरा ने मनरेगा में अपना नाम नहीं लिखवाया होता, तो यह काम उसे मिल जाता और वह पैसे घर के खर्चे में लगाती। बाप और मंगरा की तरह जुए और दारू में सब कुछ नहीं बहाती। टोकरी सोमारी के पास छोड़कर उठी। उसने दवा दुकान में जाकर बताया कि उसके बाप को मलेरिया वाला जर चढ़ा है। सिर्फ एक दिन की गोली चाहिए। मलेरिया एक दिन में ठीक नहीं होगा, दुकानदार ने समझाया। एखन हमर पास एतई कचिया नखे कि सब दवाई ले सकमू। से ले आइजेक दिनेक दे। दुकानदार ने दो टेबलेट दे दिए और 20 रुपये ले लिए। सुंदरी ने बचे 20 रुपये में से 18 रुपये का डेढ़ किलो चावल खरीदा; और दो रुपये अपने आंचल में बांध लिए। सोमारी के पास आकर उसने पूछा, तोरा देरी होतौ तो हम जात हियौ। बाप कर दवाई देवे के होतै।

सोमारी ने कहा, नए रे! रुक, चलत हियौ। चाउर तो आज घर में है। माय कर धोती लेवे के है। बाप तीन दिन से बिलौती के चटनी खाय ला बोलत है। सोचत थीयई एक पाव बिलौती किन लेतलियई। साड़ी आज नी किनब। ओतना पइसा नखे। हाट से बिलौती खरीद कर सोमारी सुंदरी गांव की ओर चली। रास्ते में सुंदरी ने सोमारी से एक टमाटर यह कहकर मांग लिया कि इससे बाप के मुंह का स्वाद बदल जाएगा।

घर में खाने वाले चार जने और कमाने वाली एक अकेली सुंदरी। प्रेमा कमाने गई भी है तो उसका कोई अता-पता नहीं है। मंगरा का तो घर में होना न होना बराबर ही है। यूं कुछ साल पहले सुंदरी की जिंदगी इतनी ज्यादा नीरस नहीं थी। पहले दूसरे तरीके के अभाव थे। अब दूसरे तरीके के हैं। बाप कमाता था तो हड़िया के साथ देशी शराब भी पीता था। उसकी सारी कमायी उसी में निकलती थी। माय भी रोज कुछ न कुछ कमा ही लेती थी। मंगरा बाप के कदमों पर ही चल रहा था। बल्कि कुछ आगे ही निकल गया था। जुआ खेलता; जाने किस आनंद की आस में अफीम पर भी हाथ साफ कर देता। इसके बावजूद जैसे ही उसके पास पीने से ज्यादा पैसे आते वह माय को दे देता। हां जिस दिन पीने के लिए पैसे नहीं होते उस दिन माय के पास आकर अपने पैसे मांगना शुरू कर देता। इस प्रकार से घर में खाने का काम चल जाता था। सुंदरी और प्रेमा मइया रोज झरने पर नहाने जाती और घंटों नहाती। तब ऐसी कोई दिक्कत कहां थी। बाप ने मंगरा को कई जगह चौकीदारी की पक्की नौकरी लगवाई, पर नौकरी मिलते ही मंगरा के आलस्य बढ़ जाता। दिन चढ़े हड़िया पीकर या किसी अन्य नशे से लाल आंखे किए वह जब पहुंचता तो मालिक का आग बबूला होना सही ही होता। फिर जल्द ही उसकी छुट्टी हो जाती क्योंकि कई बार डांटने और समझाने के बाद भी वह कभी समय पर नहीं पहुंचता था। अब तो उसकी हालत यह हो गई है कि बिना नशे के दो घंटे भी नहीं रहता। उसके घर आने या जाने का भी कोई समय निश्चित नहीं था। जाने किस बीमारी से माय की आंखों की रोशनी कैसे धीरे धीरे चली गई; किसी को पता भी नहीं चला। जब माय ने एक

दिन अचानक कहा कि उसे आजकल कुछ दिखाई नहीं देता तो किसी के समझ में कुछ नहीं आया। बाप ने कर्ज, उधार लेकर कुछ पैसे जुटाए और माय को ठेले पर ओरमांझी के हॉस्पिटल ले गया। डॉक्टर ने कहा कि बहुत दिन से बीमारी थी। इलाज नहीं हुआ तो आंखें खराब हो गईं। तीन-चार साल में माय खाना बनाने के अलावा घर के सारे काम कर लेती हैं। इसके बाद ही प्रेमा और सुंदरी की मुसीबतें बढ़ी हैं। मंगरा तो घर में पैसे नहीं ही देता बाप ने भी कोई पैसे देना बंद कर दिया। शायद ही कभी कमाने जाता। रोज उसे हड़िया पीने के पैसे जरूर चाहिए।

प्रेमा और सुंदरी अहले सुबह उठकर घर के सारे काम निबटाती और रेजा के काम के लिए निकलती। घंटों चौक पर मजदूर और रेजा के साथ खड़ी रहती तो कहीं कहीं पत्थर तोड़ने, ईंट ढोने का काम मिलता। कभी-कभी तो दिन भर इधर-उधर भटक कर शाम को खाली हाथ घर आतीं। गांव में खेत भी थे और आम के बाग भी। पर ये उनके किस काम के। ओरामांझी प्रखंड का यह गांव पिस्का प्राकृतिक सुमा से पूर्ण था। गांव के पास ही इचादाग और गगारी पहाड़ थे। दूर से दोनों पहाड़ी के बीच का यह गांव अत्यंत मनोरम दिखता था। आदिवासियों के दूसरे गांव, पालू, तापे, बिजांग सब तो पास ही थे; रांची के किसी दो मुहल्ले की तरह। उपर हरी पहाड़ी नीचे गांव के बाग और खेत मिलकर गांव को स्वर्ग बनाते थे। ओरमांझी रोड के दूसरी तरफ के गांव गणेशपुर, कुरूम, चेतनबारी, उकरीत आदि ऐसे ही मनोरम गांव थे, बस वहां पहाड़ी का ऐसा सौंदर्य नहीं था और उससे मिलने वाले फायदे भी नहीं। वैसे उस इलाके इचादाग झरना काफी हद तक क्षतिपूर्ति करता था। कलकल करते झरने में लगभग सालों पानी होता। काम से छुट्‌टी पाकर मस्ती भर दिनों में लड़के-लड़कियां झरने के नीचे घंटों नहाते, वहीं पास बैठकर बाल सुखाते सुख-दुख की बातें करते। युवा वहां सपने बुनते। इलाके में अधिकतर खेतों के मालिक यूपी बिहार के आए लोग थे। कुछ खेत आदिवासियों के पास भी थे पर वे भूमि के छोटे छोटे टुकड़ों के मालिक थे। खेती के काम खुद ही सलटा लेते। जो लोग आदिवासियों को मजदूर के रूप में रखते भी थे तो सारे लोगों को नहीं रख सकते थे। काम से अधिक काम मांगने वालों की संख्या ही थी। जिन्हें काम मिलता भी था तो धान के दिनों में रोपनी और कटनी का। सब्जी बगान में काम अधिक होता नहीं था, उसमें एक दो मजदूर की ही जरूरत होती। बाकी समय आदिवासी पत्थर तोड़ने, सड़क बनाने, घर बनाने में कुली रेजा का काम देखते थे। बगान की फसले सीधे मंडी जाती। कभी-कभी लोग बची फसल आदिवासियों को बेचने को देते; पर ऐसे अवसर कम ही आते। सुंदरी बड़ी थी। बेटी थी तो क्या हुआ, इस मातृसत्तात्मक परिवार में बेटियां खुशी-खुशी पारिवारिक जिम्मेदारी उठाती हैं। महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती। पुरुष घर की जिम्मेदारी से विमुख हो जाते। महिलाएं घर छोड़ देतीं पर जिम्मेदारी नहीं। पड़ोस के गांव की शनिचरी फुआ दिल्ली या नखलउ कहीं काम करती थीं। इस बार गांव आई तो बड़े शहर में काम की स्थिति बताते हुए कहने लगीं; महीने के हजार रुपये आराम से मिल जाते हैं। उपर से खाना कपड़ा भी। जिसके घर में रहो, वहां सिर छुपाने की जगह मिल जाती है। अगर बेटी पांच महीने के बाद भी घर आती है तो घर में एक साथ पांच हजार रुपये आते हैं। कपड़े खरीदने हों या मड़ैया छाना हो सब काम आसानी से हो जाएंगे। तीज त्योहारों में लौटेगी तो साथ में कुछ शहरारू सामान भी लाएगी। सुंदरी की मां तो तुरंत बोली की कम से कम उसकी एक बेटी को तो काम दिला दे। घर में खाने वाला एक आदमी कम हो जाएगा और कुछ दिनों के बाद पैसे भी आ जाएंगे। शनिचरी फुआ ने पहले तो मना किया; कहा, दिल्ली की रेल पर बैठकर दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद कहीं भी चली जाए। स्टेशन पर ही आने जाने वाले बाबू काम दिला दिया और उधर उसे कम पैसे मिले तो इधर से बातें सुनों। लड़की ने अच्छा काम नहीं किया तो उधर से बातें सुनों। वह इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहती। पर सुंदरी की मां तो पीछे ही पड़ी कह दिया, मइंया के लेले जाउ। हम कुछो नइ कहबो। और प्रेमा शनिचरी के साथ एक नई डगर पर चली गई, ताकि मां-बाप का दुख दूर हो सके, ताकि परिवार के लोग भरपेट खा सकें, ताकि वह कुछ नया सीख सके, ताकि घर में छनई हो सके, घर के लोगों के लिए नये कपड़े खरीदे जा सके, ताकि सब लोग एक साथ रांची जाकर सिनेमा देख सके, ताकि एक दिन घर में टीवी आ जाए और नागपुरी गाने घर में ही सुन सकें, ताकि सरहूल में कम से कम एक बार तो 16 प्रकार का तियन बनाया जा सके, ताकि सुंदरी प्रेमा का विवाह धूमधाम से हो सके।

अब परिवार को चलाने की जिम्मेदारी अकेली सुंदरी पर ही थी। बाप कमाता तो था पर कभी घर में भी कुछ देगा ऐसी उम्मीद घर के किसी सदस्य को नहीं होती। यही हाल मंगरा का भी था। उससे तो एक दिक्कत यह भी थी कि वह जिस-जिस से कर्ज लेकर जुआ खेल जाता या नशे के लिए उधारी उठा लेता, तो उसे चुकान की जवाबदारी घर के दूसरे सदस्यों की होती।

सुंदरी और सोमारी घर आ गई। बाप को ज्वर था ही। मलेरिया इस गांव का स्थायी निवासी था। गांव में रोज ही किसी न किसी को सेवा देता रहता था। सुंदरी ने पहले बाप को छूकर देख; फिर पूछा कि दिन में उसने क्या खाया था। सिर्फ बूट साग उबाल कर खाया है सुनकर उसे अपनी परिस्थिति पर बड़ा गुस्सा आया। जल्दी से चूल्हा जलाया

और अधन चढ़ा दिया। नून भात बनाकर, उसने सबको खिलाया। बाप को बिलौती की चटनी भी दी।

गांव के हालत इन दिनों तेजी से बदल रहे हैं। ओरमांझी चौक पर अब मजदूरों की संख्या बढ़ने लगी है। पिस्का, नगड़ा आदि जगहों से भी मजदूर आने लगे हैं। काम के लिए बढ़ते लोगों को देख कर काम भी सिमटने लगा है। किसी को रोज काम नहीं मिलता। सुबह से लाइन लगाकर चौक पर खड़े तो सभी रहते हैं, पर काम कुछ लोगों की किस्मत में ही आ पाता है। ऐसे में सुंदरी का विश्वास भाग्य पर जमता जाता। उसे लगता आखिर वो करे तो क्या करे। घर में भी रोज ही कोई न कोई समस्या लगी रहती। केंद फल बेचकर तो घर नहीं चलाया जा सकता। कभी-कभी जब मन बहुत उदास होता तो इचादाग झरना के किनारे चली जाती। जंगल की ओर मुंह करके जंगल के बोंगा को करूण स्वर में पुकारती पर जाने क्यों बोंगा भी अब आदिवासियों से रूठा रहने लगा है। जंगल कट तो रहे ही हैं। जो बचे हैं वो आदिवासियों का पेट नहीं भर रहे हैं। कई बार सुंदरी गांव के लोगों से कह चुकी है कि अपनी बोंगा को पुकार कर कुछ बलि दिया जाए पर उसकी बात कोई सुनता ही नहीं।

इधर शनिचरी गांव नहीं आयी थी। पांच महीने होने को आए थे न प्रेमा का खत आया था न दूसरी कोई खबर ही। ऐसे तो गांव घर का शनिचरी से वर्षों पुराना परिचय था, इसलिए किसी शक शुबहा की गुंजाइश नहीं थी; लेकिन सुंदरी ने कई दिल्ली जाने वाली लड़कियों के बारे में कैसी-कैसी बातें सुनी थीं। मन का दहलना ही थी। वह कोशिश करती की बाहर सुनी बातें घर तक न आएं, नहीं तो माय और बाप की क्या हालत होगी। बाप का मिजाज इन दिनों ठीक था। उस दिन वह काम पर गया था तो 80 रुपये लाकर सुंदरी के हाथ में रखा और कहा इन पैसों से जो चाहे खरीद लो। सुंदरी को यकीन ही नहीं हुआ। बाप ने इससे पहले कब घर में पैसे दिए थे; यह तो अब याद भी नहीं है। आज भी बाप ने कहा कि वो जरा काम से जा रहा है। शाम तक पैसे लेकर लौटेगा? कुछ लाना हो तो बता दें। मारे खुशी के सुंदरी की आंख में आंसू आ गए। उसने बाप से कहा जो उसकी इच्छा हो वह ले आए।

आज वह काम के लिए नहीं निकली। आज तो उसका बाप कमाने गया है वह तो आज मौज करेगी। थोड़े पैसे होते तो जाकर नागपुरिया फिलिम देख आती। वह जंगल में भीतर तक जाएगी। झरने पर बैठकर मल-मल कर नहाएगी। मन से तैयार होगी। माय से बात करेगी। जरा गांव घूमेगी। भीत लिपेगी और उसके उपर बारीक डिजाइन बनाएगी जिसके लिए सुंदरी का आसपास के गांव में भी नाम है। रोज खाने कमाने की चिंता में ये सब कुछ कर नहीं पाती है।

शाम को उसने चावल बना कर रख दिया। माड़ भी पसा कर सुरक्षित रख दिया; हो सकता है बाप कोइनार साग ले आए। सुंदरी ने बाप से कहा था कि कई दिन से साग खाने का मन है, जंगल में मिल नहीं रहा था और खरीद कर कौन खाए। साग आएगा तो आज सुंदरी मड़सग्गा ही बना लेगी। माय भी आज खुश थी। बाप इसी तरह काम करे तो घर में खुशी आ ही जाएगी। हो सकता है मंगरा भी सुधर जाए।

भात ठंडा हो गया, अंधेरा घिर आया पर बाप नहीं आया। सुंदरी को चिंता हुई। माय और सुंदरी दुआर पर खड़े होकर बाप का इंतजार करने लगी, जब चांद डूबने लगा तो उनका मन भी डूब गया। सुंदरी सोमारी के घर गई। तोर बाप घरे हउ। देख नी, बाप घर नी आए हउ। खोजेक जाएक होतउ, उसने कहा।

लेकिन सोमारी के घर में सबने उसे दिलासा दिया कि आधी रात को खोजना बेकार है। बाप के हाथ में पैसा आया होगा तो उसने जमकर पी ली होगी। हो सकता है हड़िया छोड़कर देशी या अंग्रेजी चढ़ा ली हो। बेचारगी के साथ सुंदरी लौट आयी। माय ने कहा कि भीतर कर सो ले। सुंदरी आकर लेट गई। वैसे तो मंगरा रात भर गायब ही रहता है। कभी कभी बाप भी उसी लकीर पर चलता है। आज बात अलग थी बाप में सुधरने के लक्षण थे। दो दिन से बाप बड़े अपनेपन से बात करने लगा था; घर के मामले में रुचि लेने लगा था। आज तो घर के लिए सामान लाने निकला था। सुबह से बाप पर कितना प्यार आ रहा था सुंदरी को। और आज ही बाप पुराने ढर्रे पर लौट गया। सच ही कहीं अंग्रेजी चढ़ा कर लुढ़क न गया हो।

सुबह सुंदरी की आंख खुली तो बाहर कुछ गहमा गहमी थी। वह बाहर आयी तो सोमारी और उसकी माय उसके घर की ओर ही आ रहे थे। रे सुंदरी बाप बोंगा बन गेलउ। मसना में ले जाएक हउ। मंगरा कहां हउ। सुंदरी को लगा दुनिया गोल गोल घूम रही है, नहीं दुनिया नहीं, वही गोल गोल घूम रही है। सोमारी, उसकी मां, घर का छाइन, सामने का पेड़, पेड़ की चरई सब तो गोल-गोल घूम रहे हैं। पता नहीं कौन घूम रहा है। आंख खुली तो कोई घूम नहीं रहा था बस माय रो रही थी और जमीन पर उसकी खुद की देह पड़ी थी, जिसके पास सोमारी बैठी थी। बाप ने घर की चिंता छोड़ कर पूरे संसार की चिंता अपने सिर ले ली थी और जैसे बोंगा बन कर स्वर्ग में था।

सुंदरी के दिन पहले जैसे ही थी पर एकदम निरस। पिछले तीन साल से इलाके में पानी नहीं बरसा था; पिछले दो साल की अपेक्षा इस बार इसका असर अधिक था। टांड में टंगरा निकल आये थे। टांड गोमके भी बनिहार बन गया था।

गगारी टोंगरी और इचादाग टोंगरी दोनों ही उदास हो चले थे। पेड़ सूखने लगे। टोंगरी के बोंगा भी जैसे रूठ गया हो। टोंगरी का कोई आशीर्वाद लोगों को प्राप्त नहीं हो पा रहा था,

इन दोनों टोंगरी से जो छोटे छोटे झरने बहा करते थे उनसे पीने और खेती का कितना काम होता था। अब आदिवासी के पास इतने पैसे हो नहीं सकते कि खूंटकटी के लिए खुद से पझरा बनाए। दोईंन में धारियां पड़ी हैं। हालत सिर्फ सुंदरी की ही नहीं सबकी खराब थी। हां ये था कि उसके घर में कमाने वाली सिर्फ वह थी इसलिए उसे परेशानी अधिक थी। काम नहीं मिलता तो मां बेटी को भूखे रहना पड़ता। मंगरा जो कर्ज लेता चलता उसे चुकाने की चिंता अलग परेशान करती।

आज सुंदरी ओरमांझी के शुक बाजार गई चंदन पाहन अच्छे भले लोग हैं; बड़े अमीर भी। उनके यहां थोड़े काम के पैसे अधिक मिलते हैं। सुंदरी को सुकमी के करम पर रश्क होने लगा। उसके करम में शायद कुछ अच्छा है ही नहीं। नहीं तो क्या उसे इस अमीर आदमी के यहां काम नहीं मिल जाता, इन्हीं विचारों में खोई सुंदरी सो गई। सपने में भी उसने यही देखा कि गांव देवती उस पर प्रसन्न है, पाहन के आंगन में बैठ कर वह धान उसन रही है और पाहन आकर उसकी झोली में ढेरो रुपये डाल रहा है। सुबह उसे बड़ा अफसोस हुआ उसके सपने कभी सच जो नहीं होते हैं। वह जगंल फल की तलाश में चेतनबारी की ओर निकल गई। उसे बाप का पूर्व परिचित गगारा भगत दो तीन आदमियों के साथ मिल गया। सुंदरी ने उससे जोहार किया तो उसने सुंदरी से कुशल क्षेप पूछा। बाप के बारे में जानकर उसने अफसोस प्रकट किया। वह भी चंदन पाहन के घर काम करता है सुनकर सुंदरी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने धांगर नहीं होता। दूसरे कई काम करने होते हैं। वह सुंदरी के बाप सचमुच दो दिन के बाद सुबह-सुबह वह घर आया और सुंदरी की मां से बोला, ए सुंदरी के माए, अब सुंदरी बहुत पैसा कमातोन। सुंदरी उसके साथ गगारी बुरु की तराई होते हुए काफी आगे गई। इधर अभी जंगल घना है। पक्की सड़क नहीं है। इलाके में बीसेक घर ही होंगे। वहीं एक घर के बाहर सुंदरी बैठी। गगारा अंदर गया। थोड़ी देर में उसके साथ एक छैला लड़का आया। सुंदरी ने उसे उपर से नीचे तक देखा, यही पाहन है जो सबको काम देता है। उसने सुंदरी पर एक भरपुर नजर डाली और कहा, रे भगत जा रे तोर काम कर देबो, ऐसे तो चंदन गोमके कई रहे कि आदमी नखे राखेक, लेकिन तोर बात माइन के राइख लेत हैं। इ का काम कइर सकेल देखेक होई। तोए आज सखुआ लकड़ी पिस्का पहुंचा देबिन।

अच्छा बोलकर भगत ने विदा ली और सुंदरी से काम समझने को कहा।

का नाम हव? उसने फिर सुंदरी को भरपुर नजर देखा।

सुंदरी, सुंदरी ने सिमट कर कहा। ठीक हव, चल भीतर आ। सुंदरी मुड़ी, अब उसने घर को ठीक से देखा। घर देखने से संपन्न लग रहा था। यह सामान्य आदिवासियों के घर की तरह मिट्टी का नहीं बना था; पक्के ईट का था और इसमें खिड़की और दरवाजे भी थे। अंदर सुंदरी को एक भी औरत दिखाई नहीं दी। उसे जमीन पर बैठने को कह, वह पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। पहले सुंदरी के परिवार के बारे में पूछा, फिर काम के बारे में, अंत में शादी के बारे में भी। फिर सुंदरी से पूछा, वह उकरीत गांव जानती है क्या, कभी गई है?

सुंदरी के कहा, हां जानत हियै।

ठीक! हुआं, जहां दुठो तेतइर कर गाछ आहे, हुआं सदना भगत कर घर आहे। जाइके उकर सामान के पहुंचाए आव। तोरा सौ रुपया मिलतउ।

सुंदरी अवाक रह गई। एक सामान पहुंचान का सौ रुपया। सचमुच इहां बहुत पैसा मिलता है। उसने पूछा, का लेइके जाएला हे।

बोरा उठाव और जा। कचिया काइल लेके जाबे।

सुंदरी ने बोरा उठाया खास भारी नहीं था। माथे पर उठाकर वह चली।

किसी आदिवासी महिला के लिए आठ-दस किमी की दूरी भला दूरी होती है, सुंदरी ने सदना भगत को बोरा सौंप दिया। उसने सुंदरी से कहा, तोहों आइ गेले, चल बहुत कुछ सीखे के मिलतौ इहां। सुंदरी घर आ गई। अगर रोज सौ रुपये मिले तब तो कोई दिक्कत की बात नहीं है, वह मां की आंख अच्छे डॉक्टर से दिखा सकती है। दसरे दिन फिर वही घर। कल सामान ठीक से पहुंचा दिया था?

जी।

अच्छा, पहिले आपन कचिया धर।

सुंदरी ने हाथ बढ़ा दिया।

देख आज दूई बोरा लेगे के हौ। एगो छोट गोके हौ।

सुंदरी ने देखा, सच में दूसरा बोरा छोटा-सा ही था, ठीक हव। उसने कहा और बोरा उठाकर चल। उकरीत में आज उसने सदना भगत के घर में बहुत आदमियों को देखा। सदना भगत ने कहा, सुंदरी थोड़ा बैठ ले। गोतिया लोगन से परिचय भी कइर ले। सुंदरी आकर बैठ गई।

पर वहां परिचय जैसा कुछ नहीं था। एक आदमी तमतमाए चेहरे से बोलता जा रहा था। उसने कहा, आदिवासी के पास जंगल की ताकत ही तो अपनी थी। यह जंगल उसके पुरवजों की थाती है। यही आदिवासियों का पालन पोषण करते हैं, उनको अपने अंकबार में रखते हैं। आज सरकार आदिवासियों से उसका जंगल, उसका आवास उसकी मां छिन रही है। भला सोचिए यह जंगल नहीं रहेगा तो कोई आदिवासी कहां जाएगा। क्या जंगल के बिना आदिवासियों का अस्तित्व संभव है? आप में से कोई बताए क्या जंगल के बिना जी सकेंगे आप? यहां अपनी सरकार नहीं है न, यह सरकार तो दिकूओं की है वह आपका हमारा भला कैसे सोचेगी? वह तो आदिवासियों

का खात्मा करना चाहती है। सड़क बनाने के लिए, उनके रहने के घर के लिए जंगल काटे जा रहे हैं। उनके कारण ही तो वर्षा नहीं हो रही है, वनों में फल नहीं उग रहे। आदिवासी उनसे बदला नहीं ले रहे; चुपचाप सब कुछ सह रहे हैं, इसलिए जंगल देवता, ग्राम देवता सब आदिवासियों को नींद आती है न चैन। न खाना मिलता है न संसाधन। भला बताइये अब हड़िया पीने से आदिवासी की तबियत खराब हो रही है; यह किसके प्रताप से। देखा है कैसे लोगों को बहला कर आप की जमीन दिकू अपने नाम करा रहे हैं। सरकार झूठ-मूठ का कानून बनाती है। उनका कानून आदिवासियों के लिए है कहकर भी वो आपको बरगलाती ही है। क्या आप सब मेरी बात से सहमत हैं? क्या मैंने जो कुछ कहा वो सही नहीं है? क्या हमारे ग्राम, जंगल हमारा पेट पालने में सक्षम हैं।? उसने रुक कर बारी-बारी से कई चेहरों को देखा। एक साथ सभी ने स्वीकार किया कि ऐसा तो है ही है। सुंदरी ने भी हां में गर्दन हिलाई।

अगर आप मेरी बात से सहमत हैं तो हाथ उठाइए; कहिए कि इन दिकूओं के खिलाफ आप अपने जंगल के आन के साथ लड़ेंगे। इनसे अपना हक लेकर रहेंगे। उसने फिर तमक कर कहा।

इस बार हाथ तो उठे पर निराश सी आवाज आई, हमीन का कर सकत हियै।

अरे, अपनी ताकत नहीं जानते क्या। भगवान बिरसा, कार्तिक उरांव, सिद्ध-कान्हो ने क्या किया था? कभी दिकूओं के आगे माथा ठेका था, सुना है कहीं। अरे इन से लड़ाई-लड़नी होगी, फिर से एक हुलगुलान करना होगा। और यह आंदोलन नए जमाने की होगी, टाना भगत जैसा नहीं। टाना भगतों की स्थिति तो आपने देखी-सुनी होगी। इसलिए इन लोगों के साथ गोली बंदूक की भाषा में बात करनी होगी; वह रुका फिर भीड़ की ओर देखा, अब सबके चेहरे पर भाव दिखे।

इस लड़ाई में हम आपका साथ देंगे। हमारे अपने चंदन पाहन आपका साथ देंगे। तो बोलिए, जय जोहार, दिकूओं से अपना हक लेक रहेंगे।

सबके समवेत स्वर से जंगल हिल गया। ठीक है, हम कल यहीं पर मिलेंगे। वह व्यक्ति चला गया। लोगों में हलचल मच गई। एक बार फिर से उसी विषय पर चर्चा होने लगी। सुंदरी ने एक महिला से पूछा, का रे इहां का रोज आवे के है। सचमुच का इ लोगन के साथ मिल कइर आपन सब के राज वापस हो जैतव।

ऐ सुंदरी, इहां आवे से, इनकर साथे काम कइरे से कम से कम पैसा तो मिलतए। हमीन सब के परिवार के खाय खातिर रोवे तो नी पड़तै। आहन के साथ अगर काम कइरे से जंगल और जमीन हमीन के हो जइते तो का खराब है रे। अपन दुश्मन के ही मारे पड़तै न। इ ता नीमन बात आहे।

बात सुंदरी को जंजी। वह राशन लेकर घर पहुंची। पूरे मन से भात तियन बनाया। खाया खिलाया और घर के बाहर चटाई बिछा कर लेट गई। उपर का आसमान उसे बहुत नजदीक लगने लगा। तारे आकाश में नहीं अपने ही आंचल में नजर आने लगे। ढेर सारे रंगीन सपनों के बीच वह बाहर ही सो गई।

सुबह नहा कर अच्छे से तैयार हुई सुंदरी। कितने दिनों के बाद बालों में तेल डाला। आज उसे अपने शरीर पर गोदना की कमी खली। उसके सिर्फ हाथ और पैर में गोदना है। जैसे ही पैसे आएंगे, वह अपने गले में गोदना से हसूली का डिजाइन बनवाएगी, साथ ही माथे पर टिकुली भी गोदाएगी। उस आदमी ने सुंदरी को एक बोरा के साथ एक थैला दिया।

लेकर वह जाने को मुड़ी तो बोला, तनिक बइठ जा। शरबत पी लेव।

सुंदरी रूक गई। जाने कब से शरबत नहीं पी थी। वह अंदर के कमरे से दो गिलास शरबत लेकर आया। ले, पी लेव। सुंदरी ने हाथ बढ़ाया।

ऐ गोया, तु सुंदर आहे रे। तानिक आपन ध्यान कर, तानिक हमर भी।

सुंदरी शाम से लाल हुई। उसने जल्दी से शरबत गटका और सामान उठा कर उकरीत की चली। आज वहां सभा शुरू ही होने वाली थी। सुंदरी आगे बैठ गई।

सबको लच्छु का जोहार, कल वाले आदमी ने बात शुरू की। कल हम जो बात कर रह थे। उसका मतलब यह था कि अपने दिकूओं से हमें अपना जंगल, अपना हक छुड़ाना है, अपने रूठे हुए जंगल देवता को मनाना है। तभी तो वर्षा होगी, जंगल फलेगा और आदिवासी पलेंगे। तो फिर ठीक है, आज से सब लोग कसम खा लो कि अपने जंगल के लिए चंदन पाहन के साथ मिलकर जान की बाजी लगा देंगे और जंगल जमीन पर अपना कब्जा ले लेंगे। अपनी सरकार बनाएंगी। रास्ते में आने वाले सभी दिकूओं का या तो सेंदरा कर देंगे या गोली बम से उड़ा देंगे। जय जोहार।

हम गोली बम कहां से लाएंगे, भीड़ में से किसी ने पूछा।

हमारे हितैषी हैं न चंदन पाहन। वही करेंगे सब व्यवस्था। तुम सब तो अपने जंगल के लिए लड़ने को तैयार रहो।

हमें चलाना भी तो नहीं आता, कोई दूसरी आवाज आई।

किसी बात की चिंता मत करो, कल यहां आ जाना हम बताएंगे क्या करना है।

सभा समाप्त हो गई। सुंदरी के मन में दो ही बातें रह गईं, सेंदरा और गोली बम। हम गोली बम चलाएंगे तो पुलिस पकड़ लेगी। किसी को मोरा के हम अपना जंगल कैसे पाएंगे और

देवता किसी को मोराने से कैसे खुश होंगे, सुंदरी इस द्वंद्व में फंस गई। दिल में एक अनजाना भय छा गया। लगा इस रास्ते में कुछ तो गलत है। क्या करे, क्या न करे, उसकी समझ में कुछ नहीं आया। कोई ऐसा है भी तो नहीं जिससे राय सलाह लिया जा सके। वह अत्यंत विचलित हुई। पूरी रात उसे नींद ही नहीं आई। सुबह उसने सोमारी को बुलाया, उसे पूरी बात बताई।

बात सोमारी के गले भी नहीं उतरी। किसी को मार कर क्या होगा, कहीं पुलिस जेल में बंद कर देगी तो। बस एक ही बात काम की लगी, हर दिन काम के बदले सौ रुपये मिलेंगे। काम की जो हालत है उससे सब परिचित हैं। उनके यहां काम करने से पेट भरने की दिक्कत तो नहीं होगी। घर में किसी को भूखे पेट सोना तो नहीं पड़ेगा। देख सुंदरी, उनसे साफ साफ पूछ लेना कि पुलिस तो नहीं पकड़ेगी और गोली बम के अलावा और कोई काम हो तो वो ही मांग लेना। अगर सब बात ठीक हो तो मेरे लिए भी काम मांग लेना। घर में खाने का ठिकाना कहां जुड़ता है। सोमारी बोली।

सुंदरी को भी सुबह से ही काम की तलाश में चौराहे-चौराहे खड़ा रहने और निराश लौटने, केंद और झंगरी बेचने की अपेक्षा यह काम ज्यादा सही लगा। कम से कम भूखे सोने की नौबत तो नहीं आएगी।

सुंदरी रोज के समय पर पाहन के घर पहुंची। वह आज भी छैला बना बैठा था। सुंदरी को देखकर बोला, आज तोके तीन गो सामान लेइके जाए आहे। पारबे कि नीही

का हव, सुंदरी ने पूछा।

ऐ देख, एगो बोरा, दुइगो झोला,

सुंदरी ने देखा, रोज वाला बोरा था साथ में दो छोटे झोले।

ठीक हव, उसने कहा और जमीन की ओर देखने लगी।

ऐ गोइया कुछ कहबो का। का सोचत ही आपन मन में।

सुंदरी को आश्चर्य हुआ, इसे कैसे मालुम कि वह कुछ सोच रही है और उससे कहना चाहती है।

हां, मोए सोचुला दुसर के मारले का फायदा, हमखो तो पुलिस धरी।

देख गोइया। हमीन कर विश्वास कर। तोए कुछ नी होतव। देख तानिक हमर तरफ तो देख।

सुंदरी ने धीरे से उसकी तरफ देखा, सच पाहन पर उसे थोड़ा प्यार आने लगा था। जब भी वह गोइया कहता सुंदरी को जरा भी बुरा नहीं लगता। उसकी आंखों में जो सम्मोहना था, उसने सुंदरी से हां करा लिया। वह वहां से चली तो दूसरी ही सुंदरी थी। जब उकरीत पहुंची तो उसे ध्यान आया सोमारी के बारे में तो बात की ही नहीं। खुद पर बड़ा गुस्सा आया। उकरीत में सभा बैठी थी। लच्छु के आगे आठ दस बंदूक रखी थी। कुछ नए लोग भी थे जो वहां खड़े थे। उसे देख कर लच्छु ने कहा, आओ सुंदरी हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे। फिर सबको संबोधित करते हुए बोला, यहां खतरा है हमें और भीतर की ओर चलना होगा, चलाना वहीं सिखेंगे। सब चले। जंगल के अंदर पहुंच कर सबको लाइन से खड़ा कर दिया गया। सुंदरी ने देखा उसके लाए बोरा और झोला भी एक आदमी लेकर आया था। जब बोरा से निकला सामान बंदूक में भरते हुए एक लड़के ने बताया कि यह गोली है तो सुंदरी को विश्वास नहीं हुआ कि यही बोरा वह लाई थी। बाप रे। उसे पता भी नहीं था और उसके बोरे में गोली भरा था। कहीं गोली फट जाता तो तभी उस लड़के ने निशाना साधते हुए गोली चला दी। ठायं की जोरदार आवाज हुई, पेड़ों पर बैठे पक्षी उड़े। पत्ते कांपे, जंगल जैसे सहम गया और डर के मारे सुंदरी बेहोश हो गई।

आंख पर पानी के छींटे पड़े तो उसने आंख खोली। उठ सुंदरी, तुम तो बहादुर हो। ऐसे कैसे गिर पड़ी, अपने जंगल के लिए एक बंदूक नहीं चला सकती, इधर आओ तुम्हें हम सिखाएं, लच्छु ने कहा।

सुंदरी को बड़ी शरम मालूम हुई। जब कोई नहीं डरा तो उसे भी नहीं डरना चाहिए था, सोचकर वह उठी और लच्छु के पीछे चली। थोड़ा आगे जाकर उसने बंदूक झुकाया और सुंदरी की उंचाई तक लाया, बंदूक पास देख सुंदरी थोड़ा पीछे खिसकी। फिर डरती है, अच्छा चलो। आज तुम देखो तुम्हारी ट्रेनिंग कल से होगी, उसने हंसते हुए कहा और सचमुच सुंदरी पीछे खिसकर सबकी ट्रेनिंग देखती रही। शाम को सबकी छुट्टी हुई।

दूसरे दिन जब वह गगारी बुरू की तराई में पहुंची तो पाहन ने हंस कर कहा, का रे सुंदरी, तोए बहुत डाराही ला।

सुंदरी ने कुछ नहीं कहा, रास्ते में वह सोचती आयी थी कि पाहन से पूछेगी, उसने सुंदरी को गोली पहुंचाने के लिए दे दिया और बताया भी नहीं। पर सुंदरी कुछ पूछ नहीं सकी। वह देख रही है कि आजकल वह पाहन से पूछना चाहती है पर उसके सामने आते ही सारी बातें मन में ही रह जाती हैं। सुंदरी अपने विचार में ही खोयी थी कि पाहन ने उसका हाथ पकड़ लिया। पाहन मोके छोइड़ न। उसने हाथ खिंचते हुए कहा।

तोर प्यार मोक जरूरी है रे गोइया। पाहन ने उसे पास खिंचा।

मोके छोइड़ दे, सुंदरी फिर बोली।

छोड़ ना सकत हिऔ। जुदा ना होबे रे, नी हाम मइर जोड़ी तोए संगे ही चुमाबो।

उनके संग जोड़ी तोए संगे ही चुमाबो।

उनके बीच पलास चटकने लगे, उसकी लाली में दोनो सराबोर हो गए।

सुंदरी जब उकरीत के लिए चली तो लगा जैसे जमीन पर नहीं आसमान में चल रही हो। उसने अपने आप समझ लिया सब लोग जंगल में मिलेंगे।

सबकी ट्रेनिंग चल रही थी। ठांय ठांय की आवाज हर पेड़ से आ रही थी। सुंदरी ने लच्छु के पास पहुंच कर अपने सिर का बोरा रखा और आगे बढ़कर एक बंदूक उठा लिया। आज उसने चार पांच बार गोली चलाई, उसके निशाने की सबने तारीफ की। घर जाने से पहले बोरा खोलकर सब लोगों को दो-दो रोटी और बिलौती की चटनी दी गई। पुलकित देह लिए सुंदरी घर आ गई। लेटी तो दिन की घटना आंखों के आगे फिर घटी। उसने अपने और पाहन की शादी के बारे में सोचना शुरू किया। अभी उसके पास पांच सौ रुपए जमा हैं। अगर प्रेमा लौट आती तो वह भी काफी पैसे लाती। अपनी जोड़ी चुमाने के बाद प्रेमा का भी ब्याह करना होगा, उसने सोचा।

माय प्रेमा कर कोई समाचार मिलए हे का? उसने माय से पूछा।

नहीं, सुंदरी, तोए पता लगाव। हाम्हो कतई दिन से सोचत रहों कि प्रेमा कहां आहे। शनिचरिया कर पाता नखे।

कल इस बारे में पाहन से बात करेगी। उसने सोचा और सोने की कोशिश करने लगी।

पाहन से पूछा तो उसने कोई सलाह भी नहीं दी, सिर्फ इतना कहा कि शनिचरी के घर जाकर उसका पता मालुम कर लो फिर चिठ्ठी लिखकर शनिचरी का हाल पता कर लो। सुंदरी जाने को मुड़ी तो पाहन ने फिर से अपनी ओर खिंच लिया। रूक जा रे, पहिले जोड़ी चुमा ले।

हाम बोइल देली ता समझ होइ गेलक। उसने गर्व से कहा।

दिन निकलते गए। सुंदरी अब हवा के पंखों पर सवार रहती। एक ओर पाहन का साथ दूसरी ओर अपनी माटी के लिए कुछ करने का जज्बा। उसका निशाना एकदम अचूक था। उसका ही क्यों उसके ग्रुप में अधिकतर लोगों का निशाना ऐसा था जो शायद ही कभी चूकता हो। वे लोग देशी बंदूक ही नही एके 47, एसएलआर रायफल, इंसास रायफल, एएमजी रायफल, थ्री नट थ्री रायफल, फिफ्टीन, कारबाइन, हैंड ग्रेनेड आदि चलाना जान गए थे। सुंदरी अब कोई भी हथियार लाती या ले जाती तो उसे डर नहीं लगता। पिछले दिनों उनका पहला ऑपरेशन रामगढ़ में पुलिस से मुठभेड़ था। उसमें सुंदरी ने सफलता पूर्वक 9 गोलियां चलाई थी। ऑपरेशन कोयला को लीड करते हुए उसने कोयला लूटने में अहम भूमिका निभाई। उस दौरान किए सभी हवाई फायरिंग उसे ने की। उसकी निगरानी में संगठन 50 मन कोयला लेकर भागने में कामयाब रहा। सुंदरी के जिम्मे ही है। सुंदरी ने सोमारी समेत पांच महिलाओं की नियुक्ति खाना बनाने के लिए किया है। इनका काम संगठन के लोगों के लिए खाना बनाना है। अभी दस्ते के पास फंड की कमी है। सभी को दस दिन से कोई पैसा नहीं मिला है। पर सुंदरी इन बातों से परेशान नहीं है। उसे मालूम है जैसे ही बाहर से पैसा आएगा तो सभी के बीच बांट दिया जाएगा। पहले के बचे पैसों से सब का घर चल रहा है। जब भी ट्रेनिंग होती है या स्पेशल बैठक होती है उस दिन एक समय का भोजन तो वहीं मिल जाता है। हां सुंदरी को एक ही बात अच्छी नहीं लगती, वो है कि सभी लोग दस्ते में शामिल हैं एक जैसा काम भी करते हैं, पर एक दिन के ऑपरेशन के लिए किसी को सौ रुपये मिलते हैं तो किसी को पचास या पचहत्तर रुपये ही। महंगाई बढ़ती जा रही है। सुंदरी को बहुत गुस्सा आता है, सरकार सचमुच आदिवासियों की दुश्मन है नहीं तो ज्यादा नोट छापकर महंगाई तो एक बार में कम कर देती। वह यदि नए छापे गए नोट सबको बराबर-बराबर बांट देती तो इस प्रकार की कोई दिक्कत दस्ते को नहीं होती।

सुंदरी रोज की तरह सोकर उठी और पहले अधन चढ़ा दिया, आजकल वह सुबह जल्दी से खाना बना देती है फिर आराम से नहा धोकर मिशन पर निकलती है। तभी घसिया वेदिया का नाम लेता हुआ एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया।

केकरा खोजत हीं, सुंदरी ने उसकी ओर शंकित निगाहों से देखते हुए पूछा।

घसिया वेदिया का घर यही है न, उसने चारो ओर देखते हुए पूछा।

हां, है तो। सुंदरी का दिल धक-धक कर रहा था।

यह प्रेमा नाम की लड़की आपके घर की है, उसने एक तस्वीर दिखाते हुए पूछा।

तस्वीर में कई लड़कियां थी, उसकी ओर देखते हुए सुंदरी ने विकल होकर कहा, हमरी मइयां है प्रेमा। ओकर कोई खबर आहे।

हां, युवा संघ के लोगों के पास रांची में उसे रखा गया है। कल ही तो यह फोटो हमारे अखबार में छपी थी, तुम लोगों ने पढ़ा नहीं। युवा संघ और पुलिस ने उसे दिल्ली में दलालों के चंगुल से छुड़ाया है। आकर उसे ले जाओ, हम तो उसके पते की शिनाख्त करने आए थे। साथ में और भी दस लड़कियां हैं।

सुंदरी स्तब्ध हो गई। कहां आना होगा, उसने घबराई आवाज में पूछा।

कोकर चौके से दाहिने जाने वाले रास्ते में तीसरा मकान है-युवा संघ का ऑफिस जाकर अपनी बहन से मिल लेना। उसकी कोई पहचान ले जाना तभी ला सकेगी। उसने समझाया।

पहचान काहे का? उ हमरी मइयां है इ तो सब जानत हैं, सुंदरी की समझ में कुछ नहीं आया।

अरे बाबा, अगर अपनी बहन बता कर कोई और उसे ले गया तब क्या होगा, इसलिए

अपनी बहन होने का पहचान बताना होगा, कहकर वह जाने के लिए मुड़ा।

सुंदरी की समझ में नहीं आया कि अपनी बहन को अपना कहने के लिए कौन सा पहचान देना होगा। फिर उसका मन प्रेमा से मिलने के लिए तड़फाने लगा। उसने माय को पुकारकर कहा कि माय प्रेमा आइ गेलक। रांची जाइके लानेक आहे। बिना नहाए, बिना तैयार हुए सुंदरी दौड़ पड़ी रांची की ओर। ओरमांझी रोड में आकर जब टेम्पो में बैठी तो उसे ध्यान आया उस आदमी देना होगा। लेकिन बहन होने का पहचान कैसा होता है यह सुंदरी की समझ में नहीं आया। उसने सोचा, साफ शब्दों में बता देगी की प्रेमा उसकी छोटी मइंया है बस।

कोकर पहुंच कर उसे युवा विकास संघ का दफ्तर खोजने में कोई दिक्कत नहीं हुई। अंदर पहुंचकर उसने टेबल पर बैठे आदमी से कहा कि उसे अपनी छोटी मइयां प्रेमा से मिलना है।

प्रेमा नाम की लड़की तो अभी दिल्ली से आई है, लेकिन आपके पास कोई सबुत है कि वे आपकी ही बहन है, उसने पूछा। नहीं, इस तरह तो कोई भी आदमी आकर कह सकता है। हम लड़कियों को दलालों से छुड़ाकर लाए हैं, ऐसे कैसे किसी को सौंप सकते हैं। अब प्रेमा ने ही कहा था उसका बाप घसिया बेदिया आएगा, और आई हो तुम। तुम्हारा कैसे विश्वास करें।

आप पहले प्रेमा को बुलाइए। वो मोरे देख कर ही पहचान लेगी।

ठीक है देखते हैं। उसने कहा और अंदर की ओर मुंह करके किसी मनोज का नाम लेकर पुकारा।

जी, सर। एक लड़का आकर खड़ा हुआ।

जो नई लड़कियां परसों दिल्ली से आयीं हैं न, उसमें से प्रेमा को बुलाकर ले आओ।

वह अंदर गया और पांच मिनट के बाद आया। उसके पीछे-पीछे एक लड़की भी आयी।

उलझे बाल, फटे कपड़े, सूजा चेहरा लिए जो लड़की आकर खड़ी हुई उसे प्रेमा मानने में सुंदरी को देर लगी। उसने तो कल्पना भी नहीं की थी कि प्रेमा जब लौटेगी तो उसका रूप ऐसा होगा।

उसे देख प्रेमा दौड़ कर उससे लिपट गई और फूट-फूट कर रोने लगी। का होलो मइयां। तोए ठीक हीं, सुंदरी ने उसकी पीठ सहलाते हुए पूछा।

अब नी जाएबो रे दिल्ली। उसने रोते हुए कहा और जोर से चिपट गई।

ठीक हव। पहिले घरे चल, उसने प्रेमा का हाथ पकड़कर कहा।

हामीन जइऔ, उसने सामने बैठे आदमी से पूछा।

नहीं, उसने हंसते हुए कहा। पहले यह तो साबित करो कि तुम इसकी रिश्तेदार हो, तभी तुम्हारे साथ भेज सकते हैं।

फिर तो सुंदरी ने कितना भी कहा कि वह प्रेमा की बहन है, उसने हर बार यही कहा कि कोई प्रमाण पेश करो।

कइसे साबित करें, हारकार सुंदरी ने पूछा।

राशन कार्ड, बैंक एकाउंट, कोई साथ की फोटो कुछ भी लाओ तब हम प्रेमा को तुम्हारे साथ जाने देंगे।

सुंदरी उदास होकर चली, उसका मन कर रहा था, अपने दस्ते से बंदूक लेकर आए और इस आदमी की झोपड़ी उड़ा दे।

अब साथ की फोटो वह कहां से लाए जो उसके पास है ही नहीं। राशन कार्ड और बैंक के कागज क्या उसके पास हैं, उनके करम में यह सब कहां लिखा है। वह बड़ी उदास सी घर पहुंची।

माय ने पूछा, प्रेमा कहां तो उसने कहा, रांची में है। वे कहते हैं कोई सबूत लाओ की प्रेमा तुम्हारी बहन है तब जाने देंगे, कहकर वह रोने लगी। आते समय प्रेमा कितना रो रही थी। उसकी सूरत कितनी बुरी हो गयी थी, याद करके सुंदरी के दिल में तीर चुभे।

माय भी उदास हो गई। आस पास खबर फैल गई कि प्रेमा आ गई है। कोई संस्था वाले उसे अपने पास रखे हैं और सबूत मांग रहे हैं। अगले दिन लोगों ने साथ चलकर प्रेमा को लाने की बात की तो सुंदरी को बड़ी राहत मिली। आज इसी झंझट के कारण वह तराई की ओर जा भी नहीं सकी थी, अब कल भी प्रेमा को लाने जाना है। कल किसी से समाचार भेज देगी। कल किसी से समाचार भेज देगी। उसके बिना पाहन कितना परेशान होगा, सोच कर उसे बड़ा बुरा लगा। पाहन के लिए दिल में प्यारभी आया।

खैर अब प्रेमा आ ही गई है अब वह पाहन के साथ जोड़ी चुमा लेगी, उसने सोचा।

सुबह टोले के दस लोगों के साथ सुंदरी युवा संघ के दफ्तर पहुंची।

सब लोगों के कहने पर प्रेमा को वहां से आने दिया गया। कुछ लोगों से एक रजिस्टर में अंगूठा भी लगवाया गया। रास्ते भर प्रेमा रोती रही। सुंदरी परेशान हो उठी।

घर पहुंचते ही वहां मजमां लग गया। सब प्रेमा से दिल्ली के बारे में पूछ रहे थे और प्रेमा थी कि बस रोती ही रही। सुंदरी ने सबको समझा कर घर भेजा। फिर प्रेमा के लिए खाना निकाला। खाना खाकर प्रेमा ने जो बताया उसे सुनकर सुंदरी के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। उसने सोचा कल जाकर सबसे पहले पाहन से दिल्ली जाने के बारे में कहेगी और वहां जाकर उन लोगों को मार डालेगी। गांव में कोई सोच सकता था कि शनिचरी प्रेमा को ऐसी जगह काम के लिए रखेगी, जहां रोज आधी रात को घर के सारे मर्द उस पर भूखे भेड़िए की तरह टूट पड़ेंगे। सोच कर सुंदरी के शरीर में झुरझुरी हुई। पराए शहर में प्रेमा को पुकार भी नहीं सकती थी। बेचारी पैसों की

खातिर वहां रहकर सारे अत्याचार सहती रही और उसके सारे पैसे शनिचरी को दिए गए। अगर एक अंधेरी रात में भाग कर प्रेमा किसी तरह रेलवे स्टेशन न पहुंची होती तो शायद कभी वह प्रेमा से मिल भी नहीं पाती। सोच कर ही सुंदरी के रोएं कांप गए। उसे बार बार पाहन की याद आ रही थी। कल जब वह जाकर पाहन से सारी बात कहेगी तो पाहन उसके लिए कोई न कोई रास्ता निकालेगा ही। हो सकता है खुद ही दिल्ली जाकर उन लोगों की खोज करे और उनकी बोटी बोटी नोच डाले। आखिर उसकी प्रेमा का मामला है यह। प्रेमा अब रोना नहीं, सब ठीक हो जाएगा। एक बार भी दिल्ली के बारे में मत सोचना, जो हुआ सो हुआ, उसने प्रेमा को समझाया पर वह फिर भी रोती ही रही। उसके बदन पर पड़े निशान उसके घटे दिनों के दस्तावेज की तरह दिख रहे थे। नीली लकीरों से उठने वाले दर्द से प्रेमा ही नहीं सुंदरी भी आहत हो रही थी। प्रेमा का मन दूसरी ओर करने के लिए सुंदरी ने कहा, अच्छा हुआ कि तुझे युवा संघ के अच्छे लोग मिल गए प्रेमा नहीं तो पता नहीं क्या होता।

ये लोग भी थोड़े अच्छे हैं, प्रेमा ने कहा तो सुंदरी चौंक गई। क्यों ऐ कैसे खराब है? मेरे साथ आने नहीं दे रहे थे इसलिए कह रही है; उसने पूछा।

नहीं, वे लोग, विभिन्न घरों में कैद या काम के नाम पर सतायी लड़कियों को खोजते रहते हैं। जिन लड़कियों की हालत अच्छी होती है उनको ये लोग खुद कहीं बेच देते हैं। बाकी लड़कियों को लेकर रांची आते हैं। लड़कियां लाने पर सरकार इन्हें पैसे देती है। यहां भी लड़कियों को बहुत दिन अपने पास रखते हैं, उनके घर नहीं भेजते हैं। यहां अधिकारी तो खुद ही आयी हुई कितनी ही लड़कियों को रात को अपने घर ले जाते हैं। प्रेमा ने कहा तो सुंदरी को विश्वास नहीं हुआ।

वह फिर बोली कि मैंने खुद देखा है और वहां रहने वाली झिंगनी ने हमें बताया भी है।

प्रेमा की बात पर सुंदरी को न चाहते हुए भी विश्वास करना पड़ा, लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि आखिर एक लड़की के लिए इतने सारे कुकर्म ये लोग क्यों करते हैं। लड़की बेचकर क्या उनको ढेर सारे पैसे मिलते है? वह सुबह सब बात पाहन से पूछेगी, उसने सोचा और सोने की कोशिश करने लगी।

सुबह उसने प्रेमा को पुरानी बातें भूलने के लिए कहा साथ ही पालू जाकर अपनी दोस्त गोमती से मिलने को भी। सुंदरी आज जल्दी से जल्दी पाहन के पास जाना चाह रही थी, ताकि उसे सारी बात बता सके और आगे दिल्ली जाकर उन लोगों से बदला लेने के बारे में सोच सके। पाहन के घर पहुंची तो उसे देखकर ही उसने बुरा सा मुंह बनाया। मुंह रखी रोटी गटक कर बोला कि ये क्या तरीका है? दो दिन कहां गायब रही। दस्ते में नहीं रहना तो साफ कह दे। इस तरह काम चोरी से काम नहीं चलेगा। चंदन पाहन ने किसी को मुफ्त में पैसे देने का ठेका नहीं लिया है। वैसे भी संस्था में सब लोग सुंदरी से नाराज हैं, कब से उसे निकालने की बात हो रही है वो तो वह है जो कितना कुछ सह कर उसे बचाता आ रहा है। सुंदरी एक पल को स्तब्ध रह गई फिर संभल कर कहा, वो प्रेमा के आने की सूचना मिली थी। इसी कारण अचानक नहीं आ सकी। कल ही उसे.......!

एक तो दो दिन नागा कर दिया और अब प्रेमा प्रेमा की रट लगा रही हो। जानती हो दो दिन खाना पहुंचाने में कितनी दिक्कत हुई। इसकी क्षति पूर्ति कैसे होगी। कल उकरित से रामगढ़ कुछ हथियार पहुंचना था। तुम्हारे कारण जा नहीं सका, उसका नुकसान कौन भरेगा। अब तो कल और परसो का नुकसान तुम्हें ही भरना होगा, तुम्हारे पैसों से ही उतनी रकम काटी जाएगी जितने का नुकसान हुआ। सुंदरी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह जैसे कुछ सुन ही ना रही हो; पर तभी उसने ठीक ठीक सुना, पाहन ने कहा कि कल रेल उड़ाव अभियान की बैठक थी, सबके बीच काम का बंटवारा करना था, हो नहीं सका।

रेल उड़ाव अभियान क्या है, उसने विस्मित नेत्रों से देखते हुए पूछा।

आओगी ही नहीं तो पता कैसे चलेगा। अगले सप्ताह, मूरी के पास रेल लाइन को उड़ा देना है। जब तक कुछ लोग नहीं मरेंगे सरकार को हमारी ताकत समझ में नहीं आएगी। अभी छत्तीसगढ़ में इसी तरह सरकार को समझाया गया है। यहां भी वही विधि अपनानी होगी।

अब हम रेल उड़ाएंगे? उसमें तो जनी, छउआ सब मरेंगे, सुंदरी ने डूबती आवाज में कहा।

तो मरने दो न। हमारे बच्चे नहीं होंगे, दिकूओं के बच्चे होंगे सब। अगर हमारे बच्चे भी मरते हैं तो क्या हुआ। हुलगुलान में बलिदान तो देना ही होता है।

सुंदरी के लिए सिर्फ आज का पाहन ही नया नहीं था, उसकी बातें, व्यवहार सबकुछ नया और असह्य था। अचानक उठ कर वहां से भाग भी नहीं सकती थी। रोजी रोटी का सवाल था और पाहन उसका मितई भी तो था उसके लिए उसे रुक कर उसकी बात समझनी ही थी।

पाहन, इ रेल उड़ाव के बात कोन बोलत हौ, एकरा छोइड़ दे नी। आपन सब कोइला लूट के लाबे जाब, उसने प्यार के अतिरेक से कहा।

अब तू बताबे जा दस्ता में का होतए और का नी होतए, उसने अत्यंत रूखे स्वर में झिड़का।

सुंदरी का मन टूक टूक हुआ। आज कुछौ पहुंचाबे के हव का, उसने बड़ी मुश्किल से पूछा।

देख, इ दूइगो बोरा। याद राखबिन काल्ह समय पर आवे के होतव, उसने ऐसे कहा जैसे

अपने कूली, रेजा से बात कर रहा हो।

सुंदरी ने बोरा उठाया और बिना पाहन की ओर देखे चली।

उकरीत की सभा में मूरी रेल लाइन उड़ाने की तैयारियों पर ही चर्चा हुई। मिशन के लिए बाहर से भी कुछ लोग आने वाले हैं, दस्ते के सभी लोगों को अपना काम मुश्तैदी से करना होगा। लच्छु समझा रहा था पर सुंदरी वहां थी ही नहीं। उसकी आंखों के आगे प्रेमा के शरीर के नीले निशान दिख रहे थे या मरे हुए बच्चे। क्या अब सुंदरी ठीक से काम कर, मन लगा। नइतो चंदन पाहन काम नई करेवालन का सेंदरा कर देवत है।

सेंदरा के नाम से भी सुंदरी के देह में सिहरन नहीं हुई। वह चुपचाप घर आ गई। प्रेमा दिनभर चुपाचाप घरे में बैठी रही थी, इसलिए माय बड़ी परेशान थी। माय को प्रेमा के बारे में सिर्फ इतना ही मालूम था कि शनिचरी ने सारे पैसे रख लिए और प्रेमा को ऐसे घर में रखा था जहां के कसाई लोग उसकी पिटाई करते थे। सुंदरी ने देखा प्रेमा दिवार के पास मुंह झुकाए बैठी है।

वह खुद इतनी हताश थी कि प्रेमा के लिए मुंह से दो बोल नहीं निकाल सकी। चुपचाप उसकी बगल में जाकर बैठ गई और सुबक सुबक कर रोने लगी। प्रेमा ने घबराकर उसकी ओर देखा और बोली दीदी चुप हो जा, तोए का होलव।

सुंदरी रोती रही, फिर थोड़ी देर बाद चुप हो गई, एकदम चुप। अंधेरे में दोनों बहने निःशब्द बैठी रहीं, एक दूसरे का हाथ थामे एक दूसरे को मन ही मन ढाढस बंधाते हुए।

सुंदरी की समझ में नहीं आया था कैसे क्या करे; इसलिए उकरीत गई। आज उसे पाहन के घर नहीं जाना। वहां सबको उसनी पोजिशन समझाई गई। साथ ही वो कारतूस दिखाए गए जो रेलवे लाइन में बांधने थे। उनको बांधने की अभ्यास भी करना था, क्योंकि उस दिन दस मिनट के अंदर तीन जगह कारतूस और बारूद बांधना था। रोज के ट्रेनिंग में सबको सिखाया जाता कि अगर कभी किसी को पुलिस धरे को किसी कीमत पर दस्ते के बारे में कुछ नहीं बताना है। दस्ता चोरी छुपे उसे छुड़ा ही लेगा लेकिन यदि किसी ने मुंह से एक भी बोल निकाला तो चंदन पाहन, जंगल के देवता सब मिलकर उसे सजा देंगे। उसके किए की सजा उसके परिवार में भी सबको भुगतनी होगी। आज भी सबको बार-बार समझाया गया। पाहन और बोंगा पर विश्वास करने की बात कही गई। आज सुंदरी ने निश्चय कर लिया कि अब वह काम छोड़ देगी। कल जाकर पाहन से अपने पहले के पैसे मांग लेगी और कह देगी कि उसे रेल उड़ाकर किसी को नहीं मारना है।

घर पहुंची तो माई ने कहा कि चावल तो है ही नहीं, पहले जाकर ले आओ तभी खाना बन सकता है। इधर के चक्करों में सुंदरी को याद ही नहीं रहा कि चावल नहीं है, उसने पैसे टटोले तो दो रुपए मिले। उसे ही लेकर, गांव के एकमात्र दुकान में गई और एक किलो चावल मांगे, साथ ही बता दिया कि पैसे दो दिन बाद देगी।

सुंदरी के काम पर जाने के बारे में सबको मालूम था इसलिए उसे चावल उधार मिल गए। घर आकर उसने प्रेमा से ही कहा कि किसी तरह भात पका दे। उसकी आज इच्छा नहीं है। घर के बाहर लेटकर आसमान ताकती सुंदरी की समझ में नहीं आ रहा था कि काम छोड़ देगी तो करेगी क्या? अब तो घर में प्रेमा भी आ गई है और अभी उसकी स्थिति काम करने लायक कहां है। वर्षा के बिना सब खेत सूख रहे हैं। काम की कितनी दिक्कत है। पहले कुली रेजा सिर्फ ओरमांझी चौक के पास खड़े होते थे। अब देखते देखते कहां से इतनी आदमी आ गए कि ओरमांझी थाना के पास, अपोलो हॉस्पिटल के पहले वाले चौक, बूटी मोड़, बरियातु चौक हर जगह आदमी खड़े रहते हैं और उनकी संख्या भी जाने कैसे बढ़ती जा रही है। ऐसे में एक दिन, दिन भर के काम के लिए तीन-तीन दिन धूप में कैसे खड़ी रहेगी, सुंदरी। उपर से वहां भी काम मिलने की कोई गारंटी थोड़े ही रहती है। सुंदरी ने तो सुना है अपने आसपास के गांव के लोग रोज कोकर, मोराबादी चौक, रातू रोड चौक तक काम की तलाश में जाते हैं। रेजाओं और कुलिओं के बीच होने वाले भेद भाव से भी वह परिचित है। पहले जब कुलियों को सौ, एक सौ बीस रुपये मिलते और सुंदरी को साठ रुपये तो कई बार वह बहुत लड़ती थी। इसी वजह से बहुत लोग उसे काम देने से कतराते थे, दूसरी रेजा इसी में संतुष्ट होती। सुंदरी से सबका बिगाड़ होना ही था।

सुंदरी को लगा जैसे अभी दस्ते का काम छोड़ेगी तो घर बिखर जाएगा। फिर उसने सोचा यह कुछ दिनों की ही बात है। दिल्ली का सदमा प्रेमा के मन से उतर जाएगा तो वह भी पहले की तरह काम करने लगेगी। लेकिन सुंदरी के दिल में दूसरा दरद भी तो था। पाहन के साथ जोड़ी चुमाने के सपने वह कितने दिन से देखती आ रही है। अब उसी पाहन का ऐसा व्यवहार, वह कैसे क्या करे। पाहन के साथ दिल लगा है इसलिए उसका साथ छोड़ने में कितना दुख होगा; सोचकर ही उसकी आंख में आंसू आ गए।

सुबह पाहन के घर पर अपने नियत समय पर पहुंची। पाहन ने उसे देखते ही कहा, सुंदरी कल से थोड़ा जल्दी आना रे, आपरेशन को सफल बनाना है। देख तो अपने बड़े साहब बंगाल से आए हैं। सुंदरी ने देखा उसी कमरे में एक मोटा सा आदमी लेटा था और सुंदरी की ओर ही एकटक देखे जा रहा था। उसे बड़ा अटपटा मालुम हुआ।

हां, सुंदरी तुझे उकरीत जाने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। यहीं आज साहब की सेवा कर दे; उसने आंख मारकर कहा।

साहब की क्या सेवा होगी, अभी सुंदरी सोच ही रही थी कि पाहन बाहर की ओर चला।

पाहन, तोए नी जाबे रे, सुंदरी जोर से बोली और पाहन के पीछे दौड़ी।

तु कहां आ रही है, आज तेरा काम साहब की सेवा करना है, अंदर जा, पाहन ने उसका हाथ झटका जो सुंदरी ने दौड़ कर पकड़ लिए थे।

साहब की मैं क्या सेवा करूंगी, ले जा मुझे अपने संग, उसने फिर से उसका हाथ पकड़ लिया।

जा सेवा मत करना, सिर्फ जब तक वह यहां है उसके साथ सो जाना, कहकर पाहन ने उसे अंदर की ओर धक्का दिया और दरवाजा बाहर से बंद कर लिया। सुंदरी दरवाजा पीटने को उठी, पर तब तक वह नया आदमी आकर उसे घसिटना शुरू कर चुका था। सुंदरी चीख भी नहीं सकी। सिर्फ फटी आंखों से देखती रही, कमरा वही, बिस्तर वही पर कहां वे लम्हें, कहां तो गए वे जज्बात, कहां तो दुबक गए सारे सपने, कहां.......

दोपहर से शाम हुई और फिर रात। घर का दरवाजा सुबह खुला। सुंदरी घिसट कर उठी। दरवाजा पाहन ने खोला था, सुंदरी ने उसकी ओर देखा भी नहीं और बाहर आकर तेजी से चली।

सुंदरी दोपहर तक आ जाना, पीछे से पाहन की आवाज आयी। सुंदरी ने सोच लिया था, अब वह यहां नहीं आएगी। बेठन कुएं पर रूक कर उसने मुंह हाथ धोया, साड़ी खोलकर ठीक की फिर घर की ओर चली।

उसे बाहर ही प्रेमा मिल गई; दीदी। पाहन कर काम खतम हो गेलउ? राएत के पाहन कर आदमी आए के कह गए है कि दीदी बिहाने आतउ। आइज छत ढाले कर जरूरी काम रहई। बीच में नहीं छोड़ जा सकेल।

अंदर आकर माय ने कहा, बहुत बेस आदमी रहे। कई रहे तीन दिन कर काम हय। प्रेमा को भी भेज देवेक चाही। हाम कह दिए कि प्रेमा एखन नहीं जाएक चाहत थे बहुत देर तक प्रेमा को समझा रहूं।

सुंदरी की समझ में नहीं आया क्या कहे, उसका दिमाग किसी बात को समझने में असमर्थ हो रहा था। वह चुपचाप लेट गई। तभी माय ने आकर कहा, वह साहू के यहां से तीन दिन के लिए चावल उधार ले आयी है।

सुंदरी और परेशान हो गई। अब यह उधार तो बढ़ता जा रहा है। वह कैसे चुकाएगी। पाहन के घर का काम छोड़ेगी तो पहले के बाकी पैसे भी नहीं मिलेंगे। एक तो उसके सिर हाथ पैर सब जगह भयंकर पीड़ा हो रही थी; कैसे करेगी वह दूसरा काम। थकान, दर्द, चिंता के बीच उसे नींद आ गई। प्रेमा ने झकझोर कर उठाया तो उसकी नींद खुली। बाहर निकली तो लच्छु और बिरसाय को देख कर चौक गई।

चल सुंदरी केतना सोती है, वहां ढलाई का वक्त बीत रहा है, लच्छु ने कहा।

सुंदरी अपने में सिमट गई, लच्छु को मालुम है सोचकर उसे बड़ी शर्म आयी पर डूबने को चुल्लू भर पानी भी तो नहीं था वहां। सुंदरी कर कतना अच्छा मालिक मिलल हैं। लेवे और पहुंचावे आत हैं, कछनी की माय ने कहा तो सुंदरी ने आंख उठा कर देखा, कछनी की माय, बगल घर की हिरीया, उसके पीछे उसकी मां और प्रेमा खड़ी थी ऐसा लगा भरी महफिल में उसकी चोरी पकड़ी गई हो, सब ओर से लोगों से घिरी वह चुपचाप खड़ी थी। उसने बिना किसी की ओर देखे कदम बढ़ा दिए। रास्ते भर वह ऐसे चुप रही जैसे उसे बोलना आता ही न हो। लच्छु उसे कहता रहा कि वह तो अच्छी लड़की है। मालिक बाहर से आया है दो दिन में चला जाएगा बाद में सब वैसा ही हो जाएगा। दो दिन की बात है सुंदरी काहे घबराती है, पर सुंदरी चुप रही। पाहन के घर में उसे फिर से बंद कर दिया गया।

अगले दिन सुबह पाहन आया, आज मिशन के बारे में खास बातें होंगी, तु भी चल, उसने सुंदरी से ऐसे कहा जैसे कुछ हुआ ही न हो।

पाहन तुने मुझसे कहा था कि जोड़ी चुमाएगा, और सुंदरी फुट फुट कर रोने लगी।

देख, ये तो मैं आज भी कह रहा हूं कि जोड़ी तोरे संगे चुमाबी, लेकिन चंदन पाहन का काम तो करना है न। चल आज, देखना सब जने दु दिन में केतना सीख गए हैं।

पाहन हम रेल ना उड़ाबो, सुंदरी ने फिर कहा।

तु अभी चंदन पाहन को नहीं जानती है, जिसने काम को मना किया उसे रेल की तरह ही यहां उड़ा दिया जाता है चुपचाप चल। सुंदरी गई, पर ट्रेनिंग की कोई भी बात उसकी समझ में नहीं आयी। वह चुपचाप बैठी रही। ट्रेनिंग खत्म हुई तो उसने एक सिर्फ इतना सोचा कि किसी ने भी रेल उड़ाने की बात पर मना क्यों नहीं किया।

पटरियों पर तीन जगह डायनामाइट रखा गया। सब लोगों को अलग अलग पोजिशन लेनी थी, बम फटने के बाद स्थिति समझ काम करना था। यह समझा दिया गया कि पुलिस गुस्सा करेगी और लोगों को खोजने ओरमांझी आ सकती है। कोई इस घटना के बारे में अपने घर में भी नहीं बताएगा और न ही आपस में ही इस घटना की चर्चा करेगा। अगर बाहर विशेष हलचल नहीं हुई; पुलिस ओरमांझी में खोज खबर नहीं करेगी तो सब लोग दूसरे ही दिन जमा हो जाएंगे। अगर किसी कारण से बस नहीं फटा तो दूसरी ट्रेन आने से पहले फिर से बम रखने का काम लच्छु की टोली का था। सब ठीक रहने पर इसके दो दिन के बाद ही रामगढ़ जाकर मिशन कोयला फतह करना था। कोयला छुपाने की जगह बुंडू में बनाई गई थी। कोयला वहां छोड़कर दस्ते के सभी लोगों को चक्रधपुर पहुंचकर वहां काम और अभ्यास करना था। इस योजना को पुलिस आसानी से समझ भी नहीं पाती। इस बीच वहां रेलवे ट्रेक पर फिर एक हमला करना था; लेकिन सभी प्लान

रेल उड़ाव अभियान के सफल होने और किसी के पकड़े ने जाने के बाद ही शुरू करने थे। किसी के पकड़ाते ही सभी को आम लोगों की तरह अपने घर में रहकर मजदूरी और दूसरे काम शुरू कर देना था। मिशन के दिन सुंदरी को घास काटने वाली बनकर बम की स्थिति पर नजर रखनी थी; पास की झाड़ी में बिरसाय और काल्हो छिपे थे, उन्हें स्थिति की जानकारी देनी थी। वह टोकरा लेकर बैठी। घास उससे नहीं काटा गया। तीनों बम फटे, फिर तो जो चित्कार मची कि सुंदरी का करेजा फट गया। वह रेल की ओर दौड़ी, बहते खून, कटे शरीर और बिलखते बच्चों को देख उसे पाहन, उसका मिशन, दस्ता सब पाखंड नजर आने लगा। उसका दिल पहले ही धड़क रहा था पर ऐसी स्थिति की उसने कल्पना नहीं की थी। और कुछ देखना उसके लिए संभव नहीं था, वह दौड़ती हुई भागी। भागती ही रही, मुरी से ओरमांझी की दूरी उसने दौड़कर पूरी की। बिरसाय को कोई संदेश भी नहीं दिया। बम फटने की आवाज बिरसाय को मिली पर काफी देर तक जब सुंदरी नहीं आयी तो दोनों झाड़ी से निकले और रेल के पास आ गए। घबराहट में हाथ में पकड़ा बम उनके हाथ में ही रह गया। वे भीड़ में सुंदरी को ढूंढते हुए आगे बढ़ रहे थे कि आरपीएफ वालों ने पकड़ लिया। उनके हाथ से बम छिने गए और उसी समय जम के ठुकाई भी हुई। एक से दूसरे को खबर मिलती चली गई, बस सुंदरी ही अंजान रहीं।

तीन दिन से उसने कुछ खाया नहीं है, लगता है जैसे चेतना शून्य हो गई है। कैसे खाए, जब कितने ही लोगों के मरने की गुनाहगार वह है। माय, प्रेमा सब परेशान हैं, वह कुछ भी नहीं कर सकती। उसका मन होता कि चुपचाप इचादाग झरने के पास जाए और झरने को सारी बात बता कर पूछे कि उसके गुनाह की कोई सजा हो तो बता दे। लेकिन मन, शरीर से वह इतनी टूट गई है कि उठने की भी हिम्मत नहीं होती है। इस पाप में कितना भाग उसका है वह समझ नहीं पा रही है। निश्चित रूप से जंगल के बोंगा उससे नाराज होंगे। सुंदरी लेटी लेटी सोच ही रही थी, उसके पेट में दर्द शुरू हुआ। भूख का दर्द है या नहीं, सोचते हुए उसे मानो करंट लगा, वह उछल कर खड़ी हो गई। पेट दबा-दबा कर जांचा, हिसाब लगाया और ऐ माय, कहकर उसने अपनी जीभ काट ली। वह उसी अवस्था में दौड़ी। पाहन के घर के अंदर गई तो बिलोकी बैठा था, पाहन कहां है उसने हांफते हुए पूछा।

पाहन तनिक देर आएगा, उसने सूचना दी। थोड़ा रुक कर कहा, बिरसाय और काल्हो का सेंदरा कर दिया है। ऐं कब, कौन मारा उनको, सुंदरी ने कराह कर पूछा। वह जमीन पर बैठ गई, तन और मन से थका शरीर उसकी पिंडलियां तड़तड़ाने लगी, पूरा शरीर झन्ना रहा था, लगा बैठे बैठे भी गिर पड़ेगी।

पुलिस पकड़ी थी ओके। मुरी में लाके रखा था दोनों को। सब लोग रेल में मरे लोगों को बचाने में थे। कुछ लोग स्टेशन और दूसरे जगह चेकिंग कर रहे थे। लच्छु चुपके से घुसा और काम कर दिया। सब खोजते रह गए कि कौन ने क्या कर दिया। सुंदरी मुंह बाए सुनती रही। यह तो रेल उड़ने से भी ज्यादा अप्रत्याशित और डरावना था। बिरसाय और काल्हों को काए मारा। बेचारा काल्हों की शादी तो दुई महीना पहले ही हुई थी। सुंदरी के लिए दस्ते के बारे में सोचना भी मुश्किल हो रहा था। यहां ऐसा भी होगा उन लोगों ने कभी सोचा भी नहीं था।

पाहन आया तो उसकी ओर उपेक्षित दृष्टि डालकर पूछा एक काम होलउ एकर मतलब थोड़े होई कि पूरा महिना भर कर काम होए गेलक। दस्ते कर काम बढ़ाए कर आहे और तु हे कि एता देर से आले। आज सबके पइसा देह देलव। पहिले आतले हल तो तोखो देतलू।

सुंदरी चुप रही, उसे तो बिलोकी के जाने का इंतजार था। उसके जाते ही उसने पाहने का हाथ पकड़ कर कहा, पाहन तोए बाप बनेवाला ही; डेढ महीना होय गेलक और फूट-फूट कर रोने लगी।

पाहन ने उसे परे सरका कर कहा, तोए माय बने वाली हीं तो इहां काले आले। चल जा। साल दो साल बाद सबे कुछ खतम करिक आतले।

पाहन एइसन ना कह, उसने गिड़गिड़ा कर कहा।

पाहन एइसन ना कह, उसने गिड़गिड़ा कर कहा।

तोइ जा, उसने सुंदरी को ढकेलते हुए कहा।

पाहन, पहिले कर काम कर पइसा बाकी हल से के दे, उसने उठते हुए कहा।

तोए केतना दिन से ठीक से काम नी करत हीं। काए के पइसा।

पाहन हम का खाब, उसने बड़े करूण स्वर में पूछा, तु जा। काम और पइसा जरूरी होव तो अपन बहिन कर भेज देबिन, पाहन ने उसे दरवाजे से बाहर ढकेलते हुए कहा।

सुंदरी लड़खड़ाई, फिर संभली। बाहर की ओर मुड़ी और कदम बढ़ाए। अब क्या रास्ता बचा था उसके पास उससे सोचा भी नहीं गया। जंगल के बोंगा और ग्राम देवकी को भी पुकार नहीं सकी। उसकी आंखों के आगे अपने अजन्में बच्चे, प्रेमा, माय और साहू का चेहरा डोलने लगा। साथ ही एक और डरावना चेहरा दिखा, जाने किसका था वह चेहरा; शायद भूख का........।

❑❑

दैनिक भास्कर
पंचवटी टावर 601
हरमू रोड, रांची
मो.-9905074051